विवरण प्रमेय संग्रहकार का आत्मा में अविद्या विषयक विचार

प्रभात कुमार त्रिपाठी

एक विज्ञान में अधिष्ठान एवं अध्यस्यमान दोनों के ऐक्य से अवभास होना ही अध्यास में अपेक्षित है। 'अधिष्ठान का निरुक्त ज्ञान विषयत्व होना अपेक्षित नहीं है, ऐसा मानने में केवल व्यतिरेक का अभाव हैं, अर्थात् जो विषय नहीं है उसमें अध्यास नहीं होता ऐसा केवल व्यतिरेक नहीं है। क्योंकि विषय न होने वाली स्वतः प्रकाश के संवित में क्षणिक का अध्यास देखा गया है।

आत्मा तथा अनात्मा दोनों के तादात्म्य का वोधक ''अहम्'' इस आकार वाला एक ज्ञान देखा नहीं गया है। यद्यपि आत्मा अवयव शून्य एवं अविषय होने से अंश से अथवा स्वरूप से भी 'अहम्' इस ज्ञान का विषय नहीं है, तथापि आकाश प्रतिविम्ब से युक्त दर्पण के सदृश आत्मा में अध्यस्त हुआ अन्तःकरण जिसमें आत्मा का प्रतिबिम्ब पड़ा हुआ है, अहम् इस आकार के ज्ञान से प्रकाशित होता है। 'इदं रजतम्' इस अध्यास के समान अहम् अध्यास में भी दो रूप हैं ही।